इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

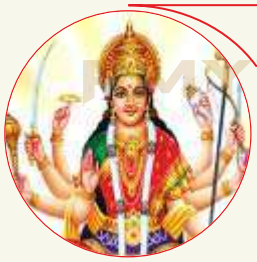

शिवयुक्त महेश्वरी साधना

22 अगस्त , कजरी तीज

महेश्वरी साधना एक प्रचण्ड और अचूक साधना है, जिसे यदि सही तरह सम्पन्न किया जाए तो इसका निशाना खाली नहीं जाता। शिवयुक्त होने से महेश्वरी साधना सौम्य रूप ले लेती है, परन्तु इसका प्रभाव और भी अधिक बढ़ जाता है। इस साधना के निम्न लाभ हैं - 1. यदि किसी प्रकार की आपके ऊपर कोई तंत्र बाधा है अथवा कोई तंत्र दोष है तो वह समाप्त होता है। 2. यदि शत्रु अधिक हावी एवं बलशाली हो गये हों, तो वे परास्त होते हैं और आत्मबल प्राप्त होता है। 3. यदि किसी प्रकार का कोई लम्बा रोग हो तो स्वास्थ्य लाभ होता है और दुर्बलता समाप्त होती है। 4. महेश्वरी देवी का विशेष सुरक्षा चक्र प्राप्त होता है, जिससे किसी भी स्थिति में साधक की अकाल मृत्यु या दुर्घटना नहीं हो सकती।

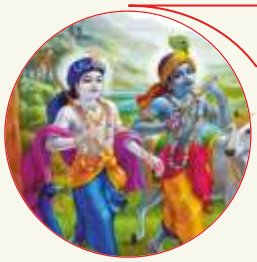

पूर्ण आत्मबल उच्च व्यक्तित्व प्राप्ति बलराम साधना

24 अगस्त - बलराम जयन्ती

इस समाज में केवल उन्हीं व्यक्तियों का मान-सम्मान होता है, जो ऊर्जा से युक्त होते है और जो अपने कार्यों द्वारा दूसरों को प्रकाशवान बनाते हैं। जब समाज में व्यक्ति को उचित स्थान प्राप्त नहीं होता है तो वह स्वयं को समाज से अलग समझने लगता है। बलराम साधना एक उच्चकोटि का प्रयोग है, जिसके पूर्ण करने पर व्यक्ति के तेज और आकर्षण में वृद्धि होती है, व्यक्ति के आत्मबल में अभिवृद्धि होती है। जिसके कारण वह अपने कार्यक्षेत्र में ऊर्जायुक्त होकर कार्य करता है एवं उसके बल, बुद्धि, साहस में वृद्धि होती है।

श्री नारायण वैभव साधना

29 अगस्त - अजा एकादशी

श्री नारायण सकल जगत को चलाने वाले आदिदेव हैं। उनकी साधना करने से साधक को हर कार्य में पूर्ण सफलता मिलती है, क्योंकि समस्त कार्य मात्र श्री नारायण की शक्ति से ही गतिशील हैं। किसी भी मनोकामना को लेकर सम्पन्न की गई इस साधना के माध्यम से साधक के संकल्पित कार्य पूर्ण होते ही हैं। इस साधना को सम्पन्न करने से साधक के व्यक्तित्व में भी आकर्षण हो जाता है, जिसके कारण उसे अनेकों लाभ होते हैं। श्री नारायण यदि प्रसन्न हो जाएं, तो उनकी सहचरी भगवती लक्ष्मी तो स्वतः ही सिद्ध हो जाती है और इस प्रकार साधक के जीवन में दरिद्रता का ही समापन हो जाता है। वही इस साधना से मोक्ष मार्ग भी प्रशस्त होता है।

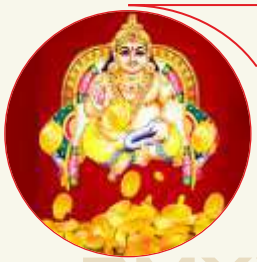

कुबेरमय कनकधारा साधना

14 सितम्बर - परिवर्तिनी एकादशी

यू तो शास्त्रों में अर्थ, ऐश्वर्य, सुख-प्राप्ति के अनेक प्रयोग लिखे गये हैं, परन्तु कुछ ऐसे प्रयोग हैं, जो सर्वकालिक श्रेष्ठ ही रहे हैं। उन्हीं प्रयोग में से एक प्रयोग है कनकधारा प्रयोग। इस प्रयोग को सम्पन्न करने से साधक को कई प्रकार के आर्थिक स्त्रोत प्राप्त होते हैं तथा उससे अर्थ का संचय भी होता है। यदि आपके पास धन आता तो है लेकिन साथ ही साथ वापस भी उसी गति से चला जाता है तथा आप उस अर्थ से ऐश्वर्य की प्राप्ति नही कर पा रहे हो और आपको अनेक ऐसे कार्यों पर व्यय करना पड़ रहा हो जो कि अनपेक्षित है, तो आप इस प्रयोग को अवश्य सम्पन्न करें। कनकधारा प्रयोग - सम्पन्न साधक के घर तो स्वयं कुबेरराज ही विराजमान रहते हैं।

साधना एक साधक के जीवन का अभिन्न अंग है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव सद्गुरूदेव के हृदय में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करते हैं। ये विशिष्ट साधनायें सम्पन्न करने के लिए कैलाश सिद्धाश्रम में सम्पर्क करें।